02.12.24

Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी व्याकरण शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण - नौ, दस

उपविषय : क्रिया (कर्म तथा संरचना के आधार पर)

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण की पृष्ठ संख्या-245 पर दिए क्रिया, कर्म तथा संरचना के आधार पर क्रिया के भेदों को समझेंगे।

बच्चो ! क्रिया की परिभाषा एवं भेद (कर्म के आधार पर) आप अपनी पिछली कक्षाओं में कर चुके हैं। एक बार फिर दोहराएँगे।

क्रिया - किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं। जैसे :-

1. वह शिक्षित है।
2. सुमित पढ़ता है।
3. मोर नाचता है।
4. वर्षा हो रही है।

धातु - क्रिया का मूल रूप 'धातु' है। जैसे चलना में 'चल' मूल धातु है 'ना' प्रत्यय के प्रयोग से 'चलना' क्रिया का सामान्य रूप है। इसी प्रकार लिख, देख, सो, दौड़, रो, बैठ, जा आदि धातु हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद निम्नलिखित रूप से किए जा सकते हैं :-

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद
(ख) संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं :-
(क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया
(क) अकर्मक क्रिया - अकर्मक क्रिया का अर्थ है - कर्म रहित क्रिया। वह क्रिया जहाँ कर्म की अपेक्षा नही रहती ; उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे :- निर्भय पढ़ता है।, सरिता खेलती है।
पढ़ता है, खेलती है - इन क्रियाओं के कर्म नहीं हैं। अत: ये अकर्मक क्रियाओं की उदाहरण है।
(ख) सकर्मक क्रिया - सकर्मक क्रिया का अर्थ है - कर्म के साथ क्रिया। वह क्रिया जिसके व्यापार (कार्य) का फल कर्म पर पड़ता है या जिसमें कर्म की आवश्यकता होती है ; उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे - कविता ने गर्म दूध पिया।, राम पुस्तक पढ़ती है।
सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं :-
(क) एककर्मक क्रिया (ख) द्विकर्मक क्रिया
(क) एककर्मक क्रिया - जिस क्रिया का केवल एक ही कर्म होता है, उसे 'एककर्मक क्रिया' कहते हैं।
जैसे :- विधु रामायण पढ़ती है।, प्रभात चित्र बना रहे हैं।
उपर्युक्त वाक्यों में 'पढ़ती' और 'बना रहे हैं' - क्रियाओं के कर्म रामायण और चित्र एक ही हैं। ये एककर्मक क्रियाएँ हैं।
(ख) द्विकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे 'द्विकर्मक क्रिया' कहते हैं।
जैसे :- नेहा ने सोहन को पुस्तक दी।
अजय ने बलवंत को पत्र लिखा।
उपर्युक्त पहले वाक्य में 'दी' क्रिया के दो कर्म हैं - सोहन और पुस्तक। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में लिखा क्रिया के दो कर्म हैं - बलवंत और पत्र। अत: ये द्विकर्मक क्रियाएँ हैं।
→ (क्रिया के पूर्व 'क्या' या 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर यदि कोई पदार्थ आए तो क्रिया 'सकर्मक क्रिया'

होगी। यदि उत्तर कुछ नहीं आता, तो क्रिया 'अकर्मक क्रिया' होगी।

(ख) संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

संरचना की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित भेद हैं :-

(क) सामान्य क्रिया (ख) संयुक्त क्रिया
(ग) नामधातु क्रिया (घ) पूर्वकालिक क्रिया
(ङ) प्रेरणार्थक क्रिया।

(क) सामान्य क्रिया - जब वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग होता है। उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।
जैसे - वह गई। ,तुम खेलो। ,मैंने लिखा।
उपर्युक्त वाक्यों में 'गई', 'खेलो', 'लिखा' एक-एक क्रिया प्रयुक्त हुई है। ये 'सामान्य क्रियाएँ' हैं।

(ख) संयुक्त क्रिया - जो क्रियाएँ दो अथवा दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती हैं, उन्हें 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। जैसे :-
माली ने साँप को मार डाला।
रमेश ने चाय पी ली थी।
पिंकी उपन्यास पढ़ना चाहती है।
उपर्युक्त वाक्यों में 'मार + डाला,' 'पी + ली + थी', पढ़ना + चाहती + है आदि क्रियाएँ एक साथ एक से अधिक रूप में प्रयुक्त हुई हैं। ये संयुक्त क्रियाएँ हैं।
→ (संयुक्त क्रियाओं में पहली क्रिया मूल क्रिया होती है। उपर्युक्त उदाहरणों में मार, पी और पढ़ना मूल क्रियाएँ हैं तथा वाक्य को ये ही मुख्य अर्थ दे रही हैं। जब कोई क्रिया अन्य क्रिया से जुड़ती है, तो वह अपना अर्थ खोकर उस मुख्य क्रिया में एक तरह की विशेषता ला देती है। अत: ये सहायक क्रियाएँ कहलाती हैं)

(ग) नामधातु क्रिया - जो नाम (संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण) धातु के समान प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'नामधातु' कहते हैं। इनमें प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनती है, उसे 'नामधातु क्रिया' कहते हैं।

जैसे :-
संज्ञा शब्दों से नामधातु क्रिया बनाना
झूठ - झुठलाना, ठग - ठगना, खरीद - खरीदना,
हाथ - हथियाना, खर्च - खर्चना, चक्कर - चकराना
सर्वनाम शब्दों से नामधातु क्रिया बनाना
अपना - अपनाना, मैं - मिमियाना।
विशेषण शब्दों से नामधातु क्रिया बनाना
गरम - गरमाना, साठ - सठियाना, चिकना - चिकनाना,
नरम - नरमाना, दुहरा - दुहराना।

(घ) प्रेरणार्थक क्रिया - जिस क्रिया से यह बोध हो कि कर्ता कर्म को स्वयं न करके किसी दूसरे को उस कार्य को करने की प्रेरणा देता है, अर्थात् किसी दूसरे से कार्य करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
जैसे :- मैथिली अनुराग से पत्र लिखवाती है।
(प्रेरणार्थक क्रियाओं में दो कर्ता होते हैं :-
1. प्रेरक कर्ता - प्रेरणा देने वाला (मृणालिनी)
2. प्रेरित कर्ता - जिसे प्रेरणा दी जाती है। (अनुराग)
उपर्युक्त उदाहरण में पत्र तो अनुराग लिखता है; किन्तु पत्र लिखने की प्रेरणा मृणालिनी देती है। अत: लिखवाना प्रेरणार्थक क्रिया है।

(ङ) पूर्वकालिक क्रिया - जहाँ मुख्य क्रिया के होने से पहले किसी क्रिया के पूर्ण होने का भाव हो, 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं। जैसे :-
- अमर अभी सोकर उठा है। अमर रोटी खाकर गया है।
उपर्युक्त वाक्यों में क्रमश: 'उठा है' क्रिया से पूर्व सोकर और 'गया है' क्रिया से पूर्व 'खाकर' क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। 'सोकर' और 'खाकर' पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं।
(पूर्वकालिका क्रिया या तो क्रिया के सामान्य रूप में प्रयुक्त होती है अथवा धातु के अंत में 'कर' या करके लगाने से 'पूर्वकालिक क्रिया' बन जाती है।)

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी व्याकरण

बच्चो! आज हमने कर्म एवं संरचना के आधार पर क्रिया के भेदों को जाना है। आप सभी इन्हें दो-तीन बार अवश्य पढ़ेंगे तथा समझने का प्रयास भी करेंगे। आप सभी को गृहकार्य के रूप में कुछ वाक्य अभ्यास के लिए दिए जा रहे हैं। इन्हें आप अपनी-अपनी व्याकरण की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

संरचना के आधार पर क्रिया के भेद का नाम लिखिए :-

(क) मैं पढ़कर सो गया। (पूर्वकालिक क्रिया)
(ख) कमला अपनी बहन से बतिया रही है। (नामधातु क्रिया)
(ग) सूर्य उगा। (सामान्य क्रिया)
(घ) मालकिन ने नौकरानी से घर की सफाई करवाई। (प्रेरणार्थक)
(ङ) वह नहाकर स्कूल जाएगा। (पूर्वकालिक क्रिया)
(च) तुम प्रतिदिन पढ़ने आया करो। (संयुक्त क्रिया)
(छ) ज़मींदार ने हलवाहों से खेत जुतवाया। (प्रेरणार्थक क्रिया)
(ज) शौर्य अभी खाकर गया है। (पूर्वकालिक क्रिया)
(झ) राजेश खाना खा चुका है। (संयुक्त क्रिया)
(ञ) वे बारात को खाना खिलवा रहे हैं। (प्रेरणार्थक क्रिया)

धन्यवाद

[अंतिम पृष्ठ]